समन्वय अनुभाग **16.03.2015 की स्थिति के अनुसार अद्यतन**

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005
संस्कृति मंत्रालय

मद सं. VII : संगठनों का विवरण, संगठनों के कार्य और कर्तव्य

क. सम्बद्ध कार्यालय

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की स्थापना 1861 में की गई थी। इसके 24 मंडल हैं जिनके माध्यम से सर्वेक्षण अपने संगठन के तहत स्मारकों के परिरक्षण और संरक्षण के कार्य का संचालन करता है। केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों और स्थलों का संरक्षण, परिरक्षण और अनुरक्षण करना भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का प्रमुख कार्य है।

2. राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

राष्ट्रीय अभिलेखागार में स्थायी परिरक्षण व प्रशासकों और अध्येताओं द्वारा प्रयोग किए जाने हेतु केन्द्र सरकार के स्थायी महत्व के अभिलेख रखे गए हैं। इसमें भारत के महापुरूषों के निजी कागजात हैं। राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत के और विदेशों से आने वाले अध्येताओं को अनुसंधान सुविधाएं देता है और पाण्डुलिपियों के परिरक्षण हेतु विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

ख. अधीनस्थ कार्यालय

1. <u>राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली</u>

1954 में स्थापित राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय ऐसा अद्‌वितीय संस्थान है जो भारत में दृश्य कलाओं के विकास और चित्र रूपांतरण का प्रतिनिधित्व करता है। इस संग्रहालय का मुख्य उद्‌देश्य भारतीय लोगों में सामान्यत: दृश्य एवं रूपांतरण कलाओं की समझ और उनके प्रति संवेदनशीलता पैदा करना और विशेष रूप से समकालीन भारतीय कला के विकास का संवर्धन करना है।

2. <u>राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली</u>

राष्ट्रीय संग्रहालय में उत्कृष्ट कला की 2,60,000 से अधिक कृतियों का संग्रह है। जिसमें मानव अस्तित्व के प्रागैतिहासिक काल से अब तक की कृतियां हैं। इस समय संग्रहालय में 29 वीथियां हैं।

3. <u>राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला</u>

राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला को विज्ञान एवं प्रौद्‌योगिकी विभाग द्‌वारा भारत सरकार के वैज्ञानिक संस्थान के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस अनुसंधानशाला के लक्ष्य व उद्‌देश्य सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण में देश के विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों की क्षमता का विकास करना तथा संग्रहालयों, अभिलेखागारों, पुरातत्व विभागों को संरक्षण सेवाएं प्रदान करना है।

4. <u>केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता</u>

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना 1955 में की गई थी। यह पुस्तकालय राष्ट्रीय ग्रन्थसूची और प्रलेखन केन्द्र के रूप में कार्य करता है। इसे निम्नलिखित स्कीमों के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी सौपी गई है :

- मासिक और वार्षिक संचयनों दोनों के रूप में रोमन लिपि में भारतीय राष्ट्रीय ग्रन्थसूची (आईएनबी) का संकलन, प्रकाशन और बिक्री। आईएनबी अंग्रेजी सहित 14 भारतीय भाषाओं में वर्तमान भारतीय प्रकाशनों का अभिलेख है, जो पुस्तक वितरण अधिनियम, 1954 के प्रावधान के तहत राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता में प्राप्तियों पर आधारित है।
- रोमन लिपि में भारतीय राष्ट्रीय ग्रन्थसूची का संकलन, प्रकाशन और बिक्री।

- इन्डेक्स इंडियाना का संकलन, प्रकाशन और बिक्री, जो 6 प्रमुख भाषाओं में वर्तमान भारतीय पत्रिकाओं में छपने वाले चुनिंदा लेखों की विषय सूची है।

5. राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता

राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना 1948 में की गई थी। राष्ट्रीय पुस्तकालय के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं :

- केवल अस्थायी सामग्री को छोड़कर मुद्रित सामग्री की सभी महत्वपूर्ण रचना का अधिग्रहण और संरक्षण।
- देश से संबधित मुद्रित सामग्री का संग्रहण।
- राष्ट्रीय महत्व की पाण्डुलिपियों का अधिग्रहण एवं संरक्षण।
- देश के लिए अपेक्षित विदेशी सामग्री का योजनाबद्ध अधिग्रहण।
- सामान्य और विशिष्टकृत दोनों ही तरह की वर्तमान और पुरानी सामग्री की ग्रन्थसूची संबंधी सूची और प्रलेखन संबंधी सेवाएं देना।
- ग्रन्थसूची संबंधी कार्यकलापों के सभी स्रोतों के सम्पूर्ण और सटीक ज्ञान की आपूर्ति करके रेफरल केन्द्र के रूप में कार्य करना।
- फोटोकॉपी और रेप्रोग्राफी सेवाएं प्रदान करना।
- अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक विनिमय तथा अन्तर्राष्ट्रीय उधार केन्द्र के रूप में कार्य करना।

6. भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण एक अग्रणी अनुसंधान संगठन है। इस सर्वेक्षण के अन्य कार्यकलाप नृजातीय विज्ञान संबंधी सामग्रियों तथा प्राचीन मानव कंकाल अवशेषों का संग्रहण, परिरक्षण, अनुरक्षण, प्रलेखन तथा अध्ययन करना है।

1. स्वायत्त संगठन (34)

1. इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद संग्रहालय में बड़ी संख्या में पुस्तकें मौजूद हैं। इलाहाबाद संग्रहालय के मुख्य उद्देश्य हैं - रंगीन पाण्डुलिपियों, कार्डों का प्रलेखन, रॉक चित्रकला की कृतियों को बड़ा बनाना, नियमित धूम्रीकरण, प्रकाशन, कलावस्तुओं का अधिग्रहण। इसके अलावा राष्ट्रीय सेमिनारों, वार्ताओं, व्याख्यानों, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, मूर्ति निर्माण का कार्य किया जाता है।

2. एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता

एशियाटिक सोसायटी को 1984 में राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया था। इसमें कार्यशालाएं, प्रदर्शनियां, सेमिनार, व्याख्यान तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अनुसंधान के विषय हैं भारत विद्याशास्त्र, इतिहास, इस्लामी इतिहास संस्कृति, लोक-साहित्य, दक्षिण पूर्वी एशियाई अध्ययन, मंच कला परम्पराएं, तिब्बती अध्ययन, रूसी व चीनी अध्ययन, भाषा विज्ञान, विज्ञान एवं चिकित्सा इतिहास, महिला अध्ययन, बौद्ध अध्ययन, अरबी व फारसी अध्ययन, मानव विज्ञान में अध्ययन, भारतीय दर्शनशास्त्र में अध्ययन तथा संस्कृत व साहित्य।

3. सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

केन्द्र के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र के कार्यकलापों को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा गया है :

- प्रशिक्षण कार्यक्रम - कठपुतली शिक्षा, ओरिएंटेशन एवं रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- कार्यशालाएं/सेमिनार।
- विस्तार एवं समुदाय प्रतिपुष्टि (फीडबैक) कार्यक्रम
- संसाधनों का संग्रह
- प्रकाशन

  सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति की स्कीम का कार्यान्वयन।

4. केन्द्रीय उच्च बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह

संस्थान का मुख्य उद्देश्य बौद्ध विचारों और साहित्य की समझ पैदा करके विद्यार्थियों के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करना तथा उन्हें आधुनिक विषयों, संग्रहों,

अनुवाद, बौद्ध अध्ययनों आदि से संबंधित दुर्लभ पाण्डुलिपियों के प्रकाशन और अनुसंधान कार्य से परिचित कराना है।

5. <u>केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी</u> (सीयूटीएस)

केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- तिब्बती संस्कृति का परिरक्षण करना।
- तिब्बती भाषा में परिरक्षित प्राचीन भारतीय विज्ञान और साहित्य का परिरक्षण करना, जिसका मूल रूप समाप्त हो चुका है।
- ऐसे भारतीय सीमावर्ती क्षेत्रों के विद्यार्थियों को वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करना जिन्होंने पहले तिब्बत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर का लाभ उठाया है।
- तिब्बती अध्ययनों में उपाधियां देने के प्रावधान देने के साथ शिक्षण के लाभ और शिक्षा का दायरा बनाना।

6. <u>दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, नई दिल्ली</u>

नि:शुल्क पुस्तक एवं सूचना सेवाएं प्रदान करने के अलावा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने ज्ञान और संस्कृति के प्रसार के केन्द्र के रूप में तेजी से कदम बढ़ाये हैं। पुस्तकों के अलावा ग्रामोफोन रिकार्ड/ऑडियो/वीडियो कैसेट घर पर सुनने के लिए नि:शुल्क उधार दिए जाते हैं। वयस्कों और बच्चों दोनों के लिए नाटक, कंसर्ट, व्याख्यान, समूह चर्चा, वाद-विवाद, फिल्म शो, पुस्तक प्रदर्शनियों जैसे सांस्कृतिक कार्यकलाप आयोजित किए जाते हैं।

7. <u>गांधी स्मृति और दर्शन समिति, नई दिल्ली</u>

समिति का लक्ष्य एवं उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, मिशन और विचारों का प्रचार करना है। इसमें गांधी पर व्यापक प्रदर्शनी, सम्मेलन कक्ष, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, पुस्तकालय, बाल कार्नर, फोटो यूनिट और एक प्रकाशन प्रभाग शामिल हैं।

8. <u>मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियन अध्ययन संस्थान, कोलकाता</u>

मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियन अध्ययन संस्थान, अनुसंधान और अध्ययन का एक केन्द्र है जो एशिया में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक/प्रशासनिक विकासों पर बल देता है। संस्थान ने अपना अध्ययन क्षेत्र भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र, दक्षिण पूर्व एशिया और चीन में भी फैलाना शुरू कर दिया है।

9. राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (NCSM) मुख्य रूप से सामान्यत: विद्यार्थियों और आम जनता में विविध और व्यापक कार्यकलापों तथा पारस्परिकता के कार्यक्रमों के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने में कार्यरत है। इसके अलावा परिषद के अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- प्रदर्शनियां, सेमिनार, लोकप्रिय व्याख्यान, लोकप्रिय शिविर आदि आयोजित करके शहरों, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना।
- विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों, संग्रहालयों, स्कूलों तथा कॉलेजों आदि को सहायता देने के उद्देश्य से विज्ञान शिक्षकों, युवा उद्यमियों तथा तकनीशियनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- विज्ञान संग्रहालय के प्रदर्शों, प्रदर्शन उपस्करों, वैज्ञानिक शिक्षण सामग्रियों को डिजाइन करना, विकसित करना तथा उनका निर्माण करना।

10. नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, जवाहरलाल नेहरू के जीवन और काल संबंधी निजी संग्रहालय सहित आधुनिक भारतीय इतिहास, पुस्तकों से संबंधित एक पुस्तकालय, पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों और फोटो, रिप्रोग्राफी प्रभाग, पाण्डुलिपि प्रभाग, अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग संबंधी प्रमुख अनुसंधान केन्द्र है। संग्रहालय भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन पर शिक्षा प्रदान करता है।

11. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अलावा, विद्यालय में बाल रंगमंच के क्षेत्र में नये क्षेत्रों का तथा विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यशालाओं के माध्यम से रंगमंच प्रशिक्षण के विकेन्द्रीकरण का पता लगाया है। विद्यालय में प्रशिक्षण गहन, व्यापक, सावधानीपूर्वक तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित होता है जिसमें रंगमंच का प्रत्येक पहलू शामिल होता है जिसमें सिद्धान्त और व्यवहार का संबंध होता है।

12. भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

1814 में स्थापित भारतीय संग्रहालय, कोलकाता एशिया प्रशांत क्षेत्र में अपने किस्म का सबसे बड़ा और सबसे पुराना संस्थान है और इसमें कला के अनेक दुर्लभ और अद्वितीय नमूने रखे गए हैं। इसमें मिस्र वीथि नाम से बहुत आकर्षक वीथि है जिसमें एक वयस्क पुरूष का शव तथा मिस्र मूल की पुरावस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। इसमें

चित्रकला वीथियां जिनमें सचित्र ताड़पत्र पाण्डुलिपियों का समृद्ध संग्रह प्रदर्शित किया गया है, प्राणीविज्ञान वीथि, वनस्पति विज्ञान वीथि, कांस्य मूर्ति एवं उत्कीर्ण वीथि, प्रागैतिहासिक एवं प्रोटोइतिहास तथा टेराकोटा वीथि, सिक्का वीथि आदि जैसे अनेक अन्य वीथियां शामिल हैं।

13. <u>इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस), भोपाल</u>

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय एक साथ मानव संस्कृतियों की वैधता व अभिव्यक्ति के विकल्पों की अनेकता को प्रदर्शित करने के लिए भारत में नया संग्रहालय आंदोलन शुरू करने में कार्यरत है। अन्य शब्दों में, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय शैक्षिक व आउटरीच कार्यकलापों के लिए अपना भौतिक बुनियादी ढांचा विकसित करता है।

14. <u>खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना</u>

इस लाइब्रेरी में 20,000 पाण्डुलिपियों, 2,25,000 मुद्रित पुस्तकों तथा ल्रगभग 230 मूल चित्रों का संग्रह है। पाण्डुलिपियों व दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण हेतु संतुलित संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित की गई है।

15. <u>ललित कला अकादमी, नई दिल्ली</u>

ललित कला अकादमी के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- चित्रकला, मूर्तिकला, ग्रेफाइट, फोटोग्राफी, वास्तुशिल्प आदि जैसी सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में अध्ययन और अनुसंधान प्रोत्साहित करना और उसका संवर्धन करना।
- यह जनजातीय लोक तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में दृश्य तथा रूपकर कलाओं के व्यापक दायरे में कार्यरत है।
- अकादमी विशाल भारतीय कला विरासत का प्रसार करती है और इस क्षेत्र में नये अनुसंधान तथा प्रयोग भी प्रोत्साहित करती है।
- अकादमी बच्चों, युवाओं तथा आम जनता में कला के प्रति जागरूकता हेतु विभिन्न सृजनात्मक कार्यक्रम चलाती है।

16. <u>इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली</u>

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कला के क्षेत्र में अनुसंधान, शैक्षिक व्यवसाय और प्रसार केन्द्र के रूप में परिकल्पना की गई है। व्यापक दायरे के रूप में "कलाओं" में

पुरातत्व से लेकर नृत्य और मानव विज्ञान से लेकर फोटोग्राफी की कला के विषय समाहित हैं जिन्हें पूरक और अखंड कल्पना में संजोया गया है। अपने कार्यकरण में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने अधिदेश को पूरा किया है और यह इस दिशा में निरन्तर कार्य में प्रयासरत है।

17. <u>कलाक्षेत्र फाउंडेशन, चेन्नई</u>

कलाक्षेत्र फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य भारतीय कला में विशेष रूप से नृत्य एवं संगीत के क्षेत्र में पारम्परिक मूल्यों का परिरक्षण करना है तथा सभी कलारूपों और क्षेत्रीय भिन्नताओं को एकीकृत करना है और इसके परिणाम स्वरूप सही कला का मानक स्थापित करना है।

18. <u>राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान, नई दिल्ली</u>

इस संस्थान की स्थापना सोसायटी के रूप में की गई थी और इसे 1989 में मानित विश्वविद्यालय घोषित किया गया। इसके मुख्य कार्य इस प्रकार हैं :

- कला इतिहास, संग्रहालय विज्ञान, संरक्षण आदि की विभिन्न शाखाओं में प्रशिक्षण और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करना।
- सामग्री, संग्रह/तकनीकी सुविज्ञता तथा सुविधाओं में साझेदारी के लिए संस्थान अन्य संस्थानों के साथ सहयोग कर रहा है।
- शिक्षण के मानकों का सुधार करने के प्रयास।
- शैक्षिक मार्गदर्शन और नेतृत्व प्रदान करना।
- संस्थान की विशेषज्ञ कृतियों का प्रकाशन।
- संस्थान ग्रीक कला, मिस्र कला, दक्षिण-पूर्व एशियाई कला आदि में पाठ्यक्रम भी चला रहा है।

19. <u>नव-नालंदा महाविहार, नालन्दा, बिहार</u>

नव-नालंदा महाविहार, नालन्दा पाली में एक वर्षीय प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम और पाली तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाता है जिसके बाद मगध विश्वविद्यालय के साथ मिलकर पीएचडी की उपाधि भी दी जाती है।

20. राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता

प्रतिष्ठान का मुख्य उद्देश्य राज्य पुस्तकालय प्राधिकारियों, संघ राज्य क्षेत्रों तथा पुस्तकालय सेवाओं के क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों के सक्रिय सहयोग से विशेषत: ग्रामीण क्षेत्रों में पठन आदतों को लोकप्रिय बनाकर पुस्तकालय सेवाओं का संवर्धन करना और इसे सहायता प्रदान करना है।

21. रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी का मुख्य कार्य पुस्तकालय हेतु पाण्डुलिपियां, लघु चित्र, पुस्तकें तथा कला व विज्ञान की अन्य वस्तुएं अधिग्रही करना व उनका संरक्षण करना तथा सन्दर्भ व अनुसंधान के केन्द्र के रूप में सेवा प्रदान करना है।

22. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

अकादमी ने स्वयं को भारत में मंच कलाओं के संवर्धन के प्रति समर्पित किया है और प्रसिद्ध, वयोवृद्ध कलाकारों तथा युवा पीढ़ी के होनहार कलाकारों की कला प्रस्तुतियों की व्यवस्था करके, शिक्षावृत्तियां देकर और प्रलेखन तथा प्रशिक्षण आयोजित करके इस उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास करती है। प्रत्येक वर्ष अकादमी मंच कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को सम्मानित करती है और राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों, राज्य अकादमियों तथा अन्य कला निकायों के साथ समन्वय व सहयोग भी करती है।

23. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

साहित्यिक संवाद, प्रकाशन तथा संवर्धन के लिए देश में सर्वोच्च संस्थान होने के साथ-साथ देश का एकमात्र ऐसा संस्थान है जो 22 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यकलाप आयोजित करती है। अकादमी ने सेमिनारों, व्याख्यानों, परिसंवादों, चर्चाओं, पठनों तथा कला प्रस्तुतियों के माध्यम से विभिन्न भाषायी तथा साहित्यिक क्षेत्रों और समूहों में अतरंग संवाद को जीवंत रखने के लिए उत्तम रूचि और स्वस्थ पठन की आदतें प्रोत्साहित करने हेतु निरंतर प्रयास किया है।

24. सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद उत्कृष्ट कला वस्तुओं और विश्व भर की 57,882 से अधिक पुस्तकों और पाण्डुलिपियों का भंडार है। इसमें प्रदर्शनियां, कार्यशालाएं, सेमिनार और परिसंवाद आयोजित किए जाते है।

25. <u>विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता</u>

मध्यकालीन व आधुनिक भारतीय इतिहास के काल संग्रहालय, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में जल रंग चित्रकारी, सिक्कों, मानचित्रों, अस्त्र-शस्त्रों एवं कवच, पाण्डुलिपियों आदि के विशाल संग्रह हैं।

26. <u>राष्ट्रीय संस्कृति निधि, नई दिल्ली</u>

राष्ट्रीय संस्कृति निधि का उद्देश्य भारत की मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें के संवर्धन, सुरक्षा एवं परिरक्षण के कार्य में कॉर्पोरेट क्षेत्र, गैर-सरकारी संगठनों, राज्य सरकारों, निजी/सार्वजनिक क्षेत्रों और व्यक्तियों की भागीदारी आमंत्रित करना है।

27. केंद्रीय हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान, दाहुंग (अरुणाचल प्रदेश)

वर्ष 2010 में स्थापित केंद्रीय हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, और यह सम्पूर्णानंद संस्कृति विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है। यह संस्थान, भारतीय संस्कृति में विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित करने के साथ-साथ दर्शनशास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययनों की विभिन्न शाखाओं में अनुसंधान हेतु अवसर भी प्रदान करता है।

<u>क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (स्वायत्त निकाय)</u>

28. पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर (राजस्थान)

29. उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला (पंजाब)

30. पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता (पं. बंगाल)

31. दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर (तमिलनाडु)

32. उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

33. उत्तर-पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर (असम)

34. दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर (महाराष्ट्र)

देश के सभी राज्यों एवं संघ राज्यक्षेत्रों में समाहित उपर्युक्त सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों, की स्थापना भारत के लोक एवं पारम्परिक कारीगरों को स्थानीय संरचनात्मक सहायता देने के लिए की गई थी। प्रत्येक केन्द्र जहां यह स्थित है, उस राज्य के राज्यपाल के साथ एक स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य करता है।
ये केन्द्र निम्ननुसार हैं :

*****